१०. सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन

भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्‌ध अलग-अलग ढंग से आंदोलन हुए । उनमें एक रास्ता था-सशस्त्र क्रांति का । इसका परिचय हम इस पाठ में प्राप्त करेंगे ।

१८५७ ई. के पूर्व अंग्रेजी सत्ता के विरुद्‌ध हुए विद्रोहों और १८५७ ई. के स्वतंत्र युद्‌ध का हमने अध्ययन किया है । उसके पश्चात के समय में रामसिंह कूका ने पंजाब में सरकार के विरुद्‌ध विद्रोह की योजना बनाई थी ।

वास`व बलवंि फडके : महाराष्ट्र में वासुदेव बलवंत फडके ने अंग्रेजों के विरुद्‌ध सशस्त्र संघर्ष किया । उनका मानना था कि ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्‌ध शस्त्रों के साथ ही संघर्ष करना चाहिए । उन्होंने वस्ताद लहूजी सालवे से शस्त्रविद्‌या का प्रशिक्षण लिया । ब्रिटिश सत्ता के विरुद्‌ध सशस्त्र विद्रोह करने के लिए उन्होंने पिंडारियों (रामोशियों) को संगठित करके विद्रोह किया । यह विद्रोह विफल रहा । अंग्रेजी शासन ने उन्हें एडन के कारावास में भेजा । वहीं पर उनकी १८८३ ई. में मृत्यु हुई । स्वतंत्रता के लिए उन्होंने सशस्त्र संघर्ष किया ।

वासुदेव बलवंत फडके

चाफेकर भाई (बंध) : १८९७ ई. में पुणे में प्लेग की महामारी का बंदोबस्त करते समय प्लेग कमिश्नर रैंड ने अन्याय और अत्याचार किए । इसके प्रतिशोध के रूप में दामोदर और बालकृष्ण चाफेकर भाइयों (बंधुओं) ने २२ जून १८९७ ई. को रैंड की हत्या की । दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव इन तीन भाइयों और उनके सहयोगी महादेव रानडे को फाँसी दी गई । एक ही परिवार के तीन भाई देश के लिए शहीद हो गए ।

इसी समय बिहार में मुंडा आदिवासियों ने बिरसा मुंडा के नेतृत्व में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्‌ध बहुत बड़ा विद्रोह किया ।

अतभमव भारि : १९०० ई. में स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर ने नाशिक में 'मित्रमेला' नामक क्रांतिकारियों के गुप्त संगठन की स्थापना की । १९०४ ई. में इसी संगठन को 'अभिनव भारत' नाम दिया गया । सावरकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गए । वहाँ से उन्होंने अभिनव भारत संगठन के भारतीय सदस्यों को क्रांतिकारी साहित्य, पिस्तौल आदि सामग्री भेजना प्रारंभ किया । उन्होंने प्रसिद्‌ध इतालवी क्रांतिकारी जोजेफ मेजिनी का प्रेरणादायी चरित्र लिखा । १८५७ ई. का विद्रोह यह प्रथम भारतीय स्वतंत्रता युद्‌ध था; यह प्रतिपादित करने वाली '१८५७ चे स्वातंत्र्यसमर' (१८५७ ई. का स्वतंत्रता युद्‌ध) पुस्तक उन्होंने लिखी ।

स्वातंत्र्यवीर वि.दा.सावरकर

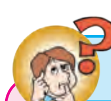

क्या तुम जानते हो ?

स्वा.सावरकर को पचास वर्ष सश्रम कारावास की सजा काटने के लिए अंदमान ले जाया गया । वे वहाँ दस वर्ष रहे । सावरकर ने अपने आत्मचरित्र 'माझी जन्मठेप' (मेरा आजीवन कारावास) में अंदमान के उन भयंकर और यातनामय दिनों के अनुभव लिखकर रखे हैं । कालांतर में सरकार ने उन्हें रत्नागिरि में ले जाकर स्थानबद्‌ध कर दिया । वहाँ सावरकर ने जातिभेद उन्मूलन, अस्पृश्यता निवारण, सहभोजन, भाषा शुद्‌धीकरण जैसे सामाजिक आंदोलन चलाए । वह एक महान साहित्यकार थे । १९३८ ई. में मुंबई में आयोजित मराठी साहित्य सम्मेलन के वह अध्यक्ष थे ।

सरकार को अभिनव भारत संगठन की गतिविधियों का सुराग लगा । अतः सरकार ने

बाबाराव सावरकर को बंदी बनाया । उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई । इस सजा का प्रतिशोध लेने के लिए अनंत लक्ष्मण कान्हेरे नाम के युवक ने नाशिक के कलेक्टर जैक्सन की हत्या कर दी । सरकार ने अभिनव भारत संगठन से जुड़े लोगों को गिरफ्तार करना प्रारंभ किया । सरकार ने जैक्सन की हत्या का संबंध स्वातंत्र्यवीर सावरकर के साथ जोड़ा और उन्हें बंदी बनाकर उनपर मुकदमा चलाया । न्यायालय ने उन्हें पचास वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई ।

बंगाल तकिारी आंालिन : बंगाल के विभाजन के बाद अंग्रेजों के विरोध में असंतोष और अधिक प्रखर हुआ । स्थानीय विद्रोहों के स्थान पर राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक क्रांतिकारी आंदोलन का उदय होने लगा । देश के विभिन्न हिस्सों में क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित युवा अपने गुप्त संगठन स्थापित करने लगे । अंग्रेज अधिकारियों को भयभीत करना, ब्रिटिश शासन व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देना, अंग्रेज सरकार के प्रति लगनेवाली धाक को नष्ट कर देना, अंग्रेजी सत्ता को उलट देना उनके उद्‌देश्य थे ।

बंगाल में क्रांतिकारी संगठन 'अनुशीलन समिति' कार्यरत थी । अनुशीलन समिति की पाँच सौ से अधिक शाखाएँ थीं । इस संगठन के प्रमुख अरबिंद घोष के बंधु बारींद्र कुमार घोष थे । इस संगठन को अरबिंद घोष का परामर्श और मार्गदर्शन प्राप्त होता था । इस समिति का बम बनाने का केंद्र कोलकाता के निकट मणिकतल्ला में था ।

१९०८ ई. में अनुशीलन समिति के सदस्यों-खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने किंग्जफोर्ड नाम के न्यायाधीश की हत्या की योजना बनाई परंतु उन्होंने जिस गाड़ी पर बम फेंका; वह गाड़ी किंग्जफोर्ड की नहीं थी । इस हमले में गाड़ी में सवार दो अंग्रेज महिलाओं की मृत्यु हुई । अंग्रेजों के हाथ न लगे; इसलिए प्रफुल्ल चाकी ने स्वयं को गोली मार दी । खुदीराम बोस पुलिस के हाथ लगे । उन्हें फाँसी दी गई । इस कांड की जाँच करते समय पुलिस को अनुशीलन समिति की गतिविधियों की जानकारी मिली । पुलिस ने इस संगठन के सदस्यों की धर-पकड़ प्रारंभ की । अरबिंद बाबू का संबंध बम बनाने के साथ जोड़ने में सरकार विफल रही । सरकार ने उनको निर्दोष रिहा किया । अन्य सदस्यों को लंबी अवधि की सजाएँ सुनाई गईं ।

रासबिहारी बोस और सचिंद्रनाथ सान्याल ने क्रांतिकारी संगठन का जाल बंगाल के बाहर भी फैलाया । पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश में क्रांति कार्यों के केंद्र खोले गए । रासबिहारी बोस और उनके सहयोगियों ने वायसराय लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का साहसिक कार्य किया परंतु इस हमले में लॉर्ड हार्डिंग बच गया ।

मद्रास प्रांत में भी क्रांतिकार्य जारी था। क्रांतिकारी वांची अय्यर ने ऐश नामक अंग्रेज अधिकारी की हत्या की । इसके बाद स्वयं को गोली मारकर उसने अपनी आत्माहुति दी ।

इंतड्या हाउस : भारत में चलने वाली क्रांतिकारी गतिविधियों को विदेश में रहने वाले भारतीय क्रांतिकारियों से सहायता प्राप्त होती थी । लंदन का इंडिया हाउस ऐसी ही सहायता पहुँचाने वाला महत्वपूर्ण केंद्र था । भारतीय देशभक्त पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इंडिया हाउस की स्थापना की थी । इस संस्था द्‌वारा इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय युवाओं को छात्रवृत्ति दी जाती थी । स्वातंत्र्यवीर सावरकर को ऐसी छात्रवृत्ति प्राप्त हुई थी । जर्मनी के स्टुटगार्ड में आयोजित विश्व

पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा

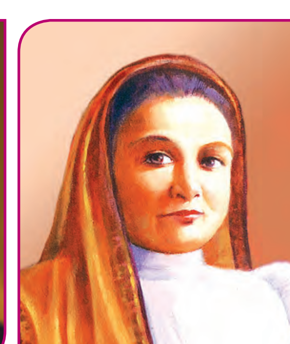

मादाम कामा

समाजवादी परिषद में मादाम कामा ने भारत की स्वतंत्रता का मुद्दा उठाया। इसी परिषद में उन्होंने भारत का ध्वज लहराया था । इंडिया हाउस से संबंधित दूसरा क्रांतिकारी मदनलाल धिंगरा नाम का युवक था । उसने अंग्रेज अधिकारी कर्जन वाइली की हत्या की। परिणामतः धिंगरा को फाँसी पर चढ़ाया गया ।

गदर आंदोलन : प्रथम विश्वयुद्ध की अवधि में अंग्रेज विरोधी क्रांतिकारी गतिविधियों को गति मिली । क्रांतिकारियों को लगता था कि ब्रिटिशों के शत्रुओं से सहायता लेकर भारत में सत्तांतर किया जा सकता है और इन प्रयासों में भारतीय सैनिकों को साथ लिया जा सकता है । इस अवसर का लाभ उठाने के लिए क्रांतिकारी संगठन स्थापित हुए। उनमें 'गदर' एक प्रमुख संगठन था ।

अमेरिका और कनाडा में रहने वाले भारतीयों ने 'गदर' संगठन की स्थापना की थी । लाला हरदयाल, भाई परमानंद, डॉ. पांडुरंग सदाशिव खानखोजे आदि क्रांतिकारी इस संगठन के प्रमुख नेता थे । 'गदर' का अर्थ 'विद्रोह' है । इस संगठन के मुखपत्र का नाम 'गदर' था । इस मुखपत्र में अंग्रेजी शासन द्‌वारा भारत पर किए जाने वाले दुष्परिणामों को स्पष्ट किया जाता था । भारतीय क्रांतिकारियों द्‌वारा की जाने वाली साहसिक गतिविधियों की जानकारी दी जाती थी। इस प्रकार 'गदर' मुखपत्र ने भारतीयों को राष्ट्रप्रेम और सशस्त्र क्रांति का संदेश दिया ।

अंग्रेजों के विरुद्‌ध विद्रोह करने हेतु 'गदर' संगठन के नेताओं ने युद्‌धजन्य परिस्थिति से लाभ उठाने का निश्चय किया। उन्होंने पंजाब में अंग्रेजों के विरुद्‌ध विद्रोह करने की योजना बनाई । सेना के भारतीय सैनिकों को विद्रोह में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित किया । निर्णय किया गया कि रासबिहारी बोस और विष्णु गणेश पिंगले विद्रोह का नेतृत्व करेंगे । परंतु किसी के द्‌वारा मुखबिरी की जाने के कारण अंग्रेजों को इस योजना का सुराग लगा । पिंगले पुलिस के हाथ लग गए । उन्हें फाँसी दी गई लेकिन रासबिहारी बोस चकमा देकर निकल जाने में सफल रहे । उन्होंने जापान जाकर अपना क्रांतिकारी कार्य जारी रखा ।

युद्‌ध की अवधि में विदेश में कई स्थानों पर क्रांतिकारी आंदोलन चल रहे थे। बर्लिन में वीरेंद्रनाथ चट्‌टोपाध्याय, भूपेन दत्त और हरदयाल ने जर्मन के विदेश विभाग के सहयोग से अंग्रेज विरोधी योजना बनाई । १९१५ ई. में महेंद्र प्रताप, बरकतुल्ला और उबैयदुल्ला सिंधी ने काबुल में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की ।

काकोरी र यं : सरकार ने दमन नीति का अवलंब किया लेकिन क्रांतिकारी आंदोलन नियंत्रण में नहीं आ सका । गांधीजी द्‌वारा असहयोग आंदोलन स्थगित किए जाने के बाद कई युवा क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर मुड़े । चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद 'बिस्मिल', योगेश चटर्जी, सचिंद्रनाथ सान्याल आदि क्रांतिकारी इकट्‌ठे आए । क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए लगने वाला पैसा इकट्‌ठा करने के लिए रेल में ले जाया जा रहा सरकारी खजाना ९ अगस्त १९२५ ई. को उत्तर प्रदेश के काकोरी रेल स्टेशन के समीप लूटा । इसी को 'काकोरी षडयंत्र' कहा जाता है । सरकार ने तत्काल कार्यवाही कर क्रांतिकारियों को बंदी बना लिया । उनपर मुकदमे चलाए गए । अशफाक उल्ला खान, रामप्रसाद 'बिस्मिल', रोशन सिंह, राजेंद्र लाहिरी को फाँसी दी गई । लेकिन चंद्रशेखर आजाद पुलिस के हाथ नहीं लगे ।

चंद्रशेखर आजाद

भगत सिंह

ंदुस् ान सोश र्ल रप कन असो एशन : समाजवादी विचारों से प्रभावित

राजगुरु

सुखदेव

हुए युवाओं ने देशव्यापी क्रांतिकारी संगठन का गठन करने का निश्चय किया । इन युवाओं में चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि प्रमुख युवा थे । ये सभी क्रांतिकारी धर्मनिरपेक्ष विचारधारा से जुड़े हुए थे । १९२८ ई. में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान पर हुई बैठक में इन युवाओं ने 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' नामक संगठन की स्थापना की ।

भारत को अंग्रेजों के शोषण से मुक्त करना इस संगठन का उद्देश्य था । साथ ही, यह संगठन किसानों-श्रमिकों का शोषण करने वाली अन्यायी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को उलट देना चाहता था । भगत सिंह ने सामाजिक न्याय और समता पर आधारित समाज निर्माण करने पर बल दिया ।

हथियार इकट्ठे करना और योजना को कार्यान्वित करना जैसे कार्य इस संगठन के स्वतंत्र विभाग को सौंपे गए थे । इस विभाग का नाम 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' था और चंद्रशेखर 'आजाद' उसके प्रमुख थे ।

इस संगठन के सदस्यों ने अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों को परिणाम दिया । भगत सिंह और राजगुरु ने लाला लजपतराय की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए सैंडर्स नाम के अधिकारी पर गोलियाँ चलाकर उसकी हत्या कर दी ।

इस समय सरकार ने नागरिकों के अधिकारों का हनन करने वाले दो विधेयक केंद्रीय विधान सभा में प्रस्तुत किए । उन विधेयकों का विरोध करने के लिए भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधान सभा में बम फेंके ।

सरकार ने तत्काल हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के ठिकानों पर धावे बोले । उनमें पुलिस को सैंडर्स की हत्या का सुराग लगा । सरकार ने क्रांतिकारियों की धर-पकड़ प्रारंभ की । उनपर राजद्रोह के मुकदमे चलाए गए । २३ मार्च १९३१ ई. को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को लाहौर की जेल में फाँसी दी गई । चंद्रशेखर आजाद अंत तक पुलिस के हाथ नहीं लगे । आगे चलकर इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में वे शहीद हो गए ।

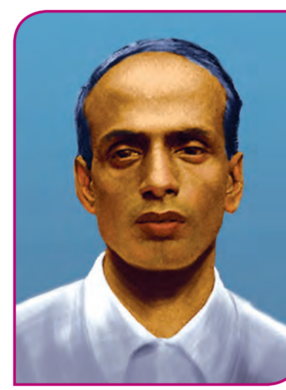

सूर्य सेन

चटगाँव श गार पर हमला : सूर्य सेन बंगाल के चटगाँव में कार्यरत क्रांतिकारी गुट के प्रमुख थे। उन्होंने अपने साथ अनंत सिंह, गणेश घोष, कल्पना दत्त, प्रीतिलता वड्डेदार जैसे निष्ठावान क्रांतिकारियों की सेना तैयार की । उनकी सहायता से सूर्य सेन ने चटगाँव के शस्त्रागार पर हमले की योजना बनाई । इस योजना के अनुसार १८ अप्रैल १९३० ई. को क्रांतिकारियों ने चटगाँव के दो शस्त्रागारों में संग्रहित शस्त्र अपने अधिकार में कर लिये । उन्होंने टेलीफोन और टेलीग्राफ व्यवस्था की तोड़-फोड़ की और संचार व्यवस्था को ठप्प करने

कल्पना दत्त

प्रीतिलता वड्डेदार

में वे सफल रहे । इसके पश्चात उन्होंने अंग्रेज सेना के साथ रोमांचक संघर्ष किया ।

१६ फरवरी १९३३ ई. को सूर्य सेन व उनके कुछ सहयोगी पुलिस के हाथ लगे । सूर्य सेन और उनके बारह सहयोगियों को फांसी की सजा दी गई । कल्पना दत्त को आजीवन कारावास का दंड दिया गया । प्रीतिलता वड्डेदार ने पुलिस के हाथ में पड़ने से बचने के लिए आत्माहुति दी ।

चटगाँव में हुए विद्रोह के कारण क्रांतिकारी आंदोलन को गति मिली । दो विद्यालयीन छात्राओं– शांति घोष और सुनीति चौधरी ने जिला न्यायाधीश की हत्या की तो बीना दास नाम की युवती ने कोलकाता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में गवर्नर पर गोलियाँ चलाईं । इस प्रकार इस अवधि में कई क्रांतिकारी घटनाएँ हुईं ।

जलियाँवाला बाग नरसंहार के लिए ओडवायर नाम का अधिकारी उत्तरदायी था । सरदार ऊधम सिंह ने इंग्लैंड में १९४० ई. में उसकी हत्या की ।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । ब्रिटिश सत्ता के साथ लड़ते हुए क्रांतिकारियों ने साहस और संकल्प के दर्शन कराए । उनका राष्ट्रप्रेम और समर्पण भाव अतुलनीय था । उनका बलिदान भारतीयों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध हुआ ।

स्वाध्याय

१. तिए गए तक्कलप से उतर्चा तक्कलप चनकर कथन पनः तर्लाि ।

(पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा, मित्रमेला, रामसिंह कूका)

(१) स्वा.सावरकर ने ...... नामक क्रांतिकारियों की गुप्त संगठन स्थापन की ।

(२) पंजाब में ..... ने सरकार के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनाई ।

(३) इंडिया हाउस की स्थापना ..... ने की ।

२. तन्म सारणी पू करो ।

क्रांतिकारी	संगठन
....	अभिनव भारत
बारींद्र कुमार घोष	....
चंद्रशेखर आजाद	....

३. तन्म को कारणसतहि स्म करो ।

(१) चाफेकर भाइयों (बंधुओं) ने रैंड की हत्या की ।

(२) खुदीराम बोस को फाँसी दी गई ।

(३) भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधान सभा में बम फेंके ।

४. तन्म न के उतर ेप तलाि ।

(१) चटगाँव शस्त्रागार पर किए गए हमले का वृत्तांत लिखो ।

(२) सशस्त्र क्रांति में स्वा.सावरकर के योगदान को स्पष्ट करो ।

(१) क्रांतिकारियों के जीवन पर आधारित नाटक, फिल्म देखो । उसमें जो प्रसंग तुम्हें अच्छा लगा; उसका कक्षा में नाट्यीकरण करो ।

(२) क्रांतिकारियों की कहानियों पर आधारित हस्तलेख तैयार करो ।

9BH9Y6